शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३८ : नई दिल्ली : २५-३१ दिसम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए टाडगढ़ पधार गए हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। अहिंसा यात्रा सतत गतिमान है। मेवाड़ के मार्गवर्ती सभी क्षेत्रों में नशामुक्ति अभियान की जैसे लहर-सी चल रही है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

(गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' की संपादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की कलम से)

अन्तिम प्रवचन और श्री जाखड़ से वार्तालाप (८८३)

"२१ जून १९९७ को अंधेरी ओरी, केलवा के बारे में दिशादर्शन प्राप्त करने के लिए वहां के कुछ श्रावक गंगाशहर आए, उनमें रोशनलालजी सांखला, सम्पतजी मादरेचा और किशनजी मादरेचा के नाम उल्लेखनीय हैं। सवाईलालजी पोकरना (फतेहनगर) भी उनके साथ थे। पदमचन्दजी पटावरी (मोमासर) पहले से गंगाशहर आए हुए थे। राजसमंद में प्रवास होने के कारण उनका भी मेवाड़ से लगाव हो गया और मेवाड़ी कार्यकर्ताओं में उन्होंने अपनी अच्छी पहचान बना ली। आगन्तुक श्रावकों ने रात्रि के समय गुरुदेव की उपासना की। अंधेरी ओरी को केन्द्र में रखकर वहां संभावित विकास के विषय में विस्तार से चर्चा हुई। श्रावकों ने अपनी समस्याएं प्रस्तुत कीं। गुरुदेव ने समाधान का पथ प्रशस्त किया। श्रावक लोग प्रसन्न और सन्तुष्ट हो गए। उन्होंने वहां से प्रस्थान करने का चिन्तन कर गुरुदेव से मंगलपाठ सुनाने का निवेदन किया।

गुरुदेव ने उनका निवेदन सुना अवश्य, पर मंगलपाठ नहीं सुनाया। उन्होंने कहा 'यह क्या आना और क्या जाना? यहां कौन आए? क्यों आए? एवं कब गए? किसी को पता ही नहीं चले और आनेवाले लौट जाएं तो कैसा-कैसा ही लगता है।...' स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में गुरुदेव का निर्देश प्राप्त होने के बाद मेवाड़ के श्रावकों ने अपना कार्यक्रम बदला। उन्होंने प्रवचन सुनने के बाद ही मंगलपाठ सुनने का निर्णय ले लिया। यह निर्णय लेते समय गुरुदेव का कृपाभाव और वात्सल्य मूर्तिमान हो उठा। कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने और उन्हें समाज में प्रतिष्ठित करने के उस नायाब तरीके ने सबको अभिभूत कर दिया।

२२ जून को प्रातः सूर्योदय के बाद आचार्यश्री महाप्रज्ञ गुरु-वन्दन के लिए 'बोथरा भवन' पधारे। वन्दना और सुखपृच्छा के बाद वे लौटने लगे तो गुरुदेव ने उनको सूचित कर दिया कि आज फिर प्रवचन में आना है। आचार्यश्री स्वयं इस सूचना से प्रसन्न हुए और जिन लोगों ने इसके बारे में सुना वे भी विशेष रूप से आनन्दित हो गए। लगभग साढ़े नौ बजे गुरुदेव प्रवचन-स्थल पर पधारे। 'वन्दे गुरुवरम्' इस समवेत ध्वनि से प्रवचन पंडाल गूंज उठा। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रवचन किया। गुरुदेव के समक्ष होनेवाला वह उनका अन्तिम प्रवचन था। गुरुदेव ने अपने प्रवचन के प्रारंभ में आचार्यश्री द्वारा कहे गए तथ्यों की पुष्टि की। कुछ समय तक गुरु-शिष्य के संवाद रूप में प्रवचन चला, जिसमें दो बिन्दुओं का स्पर्श हुआ

१. वृद्धावस्था को समाधिमय कैसे बनाया जा सकता है।
२. राजलदेसर चातुर्मास में साइटिक पेन की स्थिति में गुरुदेव द्वारा किया गया साप्ताहिक कायोत्सर्ग का प्रयोग।

अपने प्रवचन को जारी रखते हुए गुरुदेव ने कहा 'आज मुझे दो बातों की चर्चा करनी है। पहली बात है अंधेरी ओरी की। लोग आए, चर्चा की, चिन्तन किया और जाने लगे। मैंने कहा कि बस, पता ही नहीं कौन आए? क्यों आए?' समाज के इतने चिन्तनशील, कर्मठ और अच्छे व्यक्ति। परस्पर कोई हेलमेल नहीं, जान-पहचान नहीं। पोकरनाजी रोशनजी, सम्पतजी, किशनजी आदि कर्मठ कार्यकर्ता हैं। काम में जुटे हुए हैं। पर गंगाशहर-बीकानेर का

कोई व्यक्ति उन्हें क्यों जाने? ये उनको क्यों जाने? पटावरीजी को कठिनाई हो गई कि वे अपने को मेवाड़ का बताएं या थली का? कितने अच्छे कार्यकर्ता समाज के आए हैं। मैंने उनसे कहा देखो, जाना हो तो मंगलपाठ सुनलो। पर मैं तुम्हें जाने की बात नहीं कहता हूं। प्रातःकाल तक ठहरो। तुम्हारा परिचय कराएंगे। विशेषकर अंधेरी ओरी का जो काम कर रहे हो, कम-से-कम जनता को तो अवगत करा दो। लोगों को जानकारी करा दो कि कितना बड़ा काम हो रहा है।'

अपने प्रवचन को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा 'मैं अपने धर्मसंघ के तीन स्थानों का बड़ा महत्त्व आंकता हूं बगड़ी, केलवा और सिरियारी। राजसमंद तो खैर है ही। बगड़ी का महत्त्व तो इस दृष्टि से है कि वहां स्वामीजी ने अभिनिष्क्रमण किया। भाइयो! बगड़ी का काम हो गया। सिरियारी का काम अच्छे ढंग से संभल गया पर केलवा के बारे में क्या कहूं? पीछे रहा। यह स्थल पीछे रहने का नहीं है। किसी कारण से पीछे रह गया। पिछली बार जब पोकरनाजी आदि यहां आए तो मैंने कहा एक काम करो। मुनि मोहनजी (आमेट) का चातुर्मास राजसमंद है। उनको तुम वहां ले जाओ और पूरा अध्ययन करा दो। वह दिमागी आदमी है, सोचता है, चिन्तन करता है। हमारे निर्देश से मुनि मोहनजी वहां गए। उन्होंने पूरा अध्ययन किया, देखा और परामर्श किया। वहां कुछ काम हुआ है। अब ये पूरी योजना लेकर आए हैं।'

अपनी प्रथम बात का उपसंहार करते हुए गुरुदेव ने कहा 'भाइयो! हमारा तो इतना ही काम है कि इन स्थलों को कभी भूलें नहीं। केलवा और अंधेरी ओरी हमारे दिमाग से कभी निकले नहीं। वे लोग धन्य हैं, जो अंधेरी ओरी के पास निवास करते हैं और सतत भिक्षु, भिक्षु, भिक्षु जिनके दिमाग में रहता है। तेरापंथ की जन्मभूमि के उस स्थल को इतने वर्षों तक भुलाया तो नहीं, पर उसके प्रति कुछ ढिलाई अवश्य रही। अब उत्साही लोग आए हैं। पूरा समाज स्वागत करेगा इनके चिन्तन का। चिन्तन जो भी हो, वह तात्कालिक नहीं होना चाहिए। चिन्तन लम्बा रहे, उसमें दूरदर्शिता रहे और श्लथता नहीं आए।'

दूसरे बिन्दु की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से गुरुदेव ने कहा 'दूसरी बात है विद्यार्थियों की। इन्होंने कल जो इतनी कठोर परीक्षा दी, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। हमारे मुनि जिनेशजी, जिनको सबसे पहले आना था, पीछे रह गए थे। इन्होंने शिविर में बड़ा श्रम किया है, दिन-रात एक किया है। इन्होंने विद्यार्थियों के लिए समय मांगा। मैंने तारीख दे दी। पर मैं भूल गया और कायोत्सर्ग में लग गया। विद्यार्थी ठीक समय पर आए, किन्तु इन्हें रोक दिया गया। कुछ समय बाद कार्यकर्ताओं ने इन्हें अन्दर आने दिया। छोटे-छोटे विद्यार्थी नंगे पैर सड़क पर चलकर आए। बड़ी कठिन परीक्षा दी इन्होंने। किन्तु इन्हें समझना है कि बिना कड़ी परीक्षा दिए पास भी कोई कहां होता है? ये बच्चे चुपचाप आकर बैठ गए। मुझे याद ही नहीं आया कि मैंने इनको समय दिया है। इसी बीच मुनि जिनेशजी आए और दिनेशजी भी आ गए।'

मुनि जिनेशकुमारजी और मुनि दिनेशकुमारजी का नाम आते ही गुरुदेव ने फरमाया 'दीक्षा के क्षेत्र में मेवाड़ थोड़ा पिछड़ा है, मारवाड़ आगे आया है। इस विषय में भी ध्यान देना पड़ेगा। मेवाड़ पिछड़े, यह शब्द ही हमको अच्छा नहीं लगता। इस पर विचार करना चाहिए।'

उस दिन विद्यार्थियों के शिविर का समापन था। शिविर की बात को पुनः आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा 'ये नन्हें-मुन्ने बच्चे संस्कारी बन रहे हैं। संस्कार-निर्माण के इस उपक्रम में सालेचाजी (भंवरलालजी सालेचा, जसोल) ने काफी श्रम किया है। गंगाशहर के लोगों ने भी श्रम किया है। इस बार सबसे कम प्रयत्न मैंने किया। मैं इन्हें समय भी नहीं दे सका। अब मेरा यही कहना है कि विद्यार्थियों ने जिस प्रसन्न मन से साधना की है, उसे हम आगे बढ़ाएंगे, भूलेंगे नहीं। आप जानते हैं कि पूंजी प्राप्त करना एक बात है, उसे सुरक्षित रखना दूसरी बात है और पूंजी को आगे बढ़ाना तो एक अलग ही बात है। हमें तेरापंथ को भी निरन्तर आगे बढ़ाते रहना है, उसे विस्मृत नहीं करना है।'

गुरुदेव ने एक प्रकार से प्रवचन सम्पन्न कर दिया, किन्तु उनका मन नहीं भरा। जब तक वे प्रवचन में किसी गीत का संगान नहीं करते, उन्हें अधूरापन-सा लगता। संगीत के रसिक श्रोता भी गुरुदेव के मुखारविन्द से मधुर स्वरलहरी सुनकर तन्मय हो जाते। उस दिन भी गुरुदेव ने अपने प्रिय गीत का संगान किया, जिसका ध्रुवपद इस प्रकार है

प्रभो! यह तेरापंथ महान
मिला मिलेगा जिससे सबको आध्यात्मिक अवदान
प्रभो! यह तेरापंथ महान ॥

गुरुदेव ने पूरा गीत इतने ओजस्वी स्वरों में गाया, जिससे सुननेवालों को यह आभास तक नहीं हो पाया कि गुरुदेव शारीरिक दृष्टि से कुछ दुर्बल हैं। गौरवशाली तेरापंथ धर्मसंघ को महिमा-मंडित करते हुए गुरुदेव ने कहा 'बन्धुओ! वास्तव में उस पंथ की महत्ता है, जो हमें मिला है। हमारा काम है उसके गौरव को बढ़ाना। उसको आगे-से-आगे बढ़ाकर हम सही रूप में अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। इस धर्मसंघ की गतिविधि को, इसके आचार-विचार को, इसकी मर्यादाओं को और इसके अनुशासन को कहीं दुर्बल व कमजोर न होने दें। हमारा विश्वास है कि इस धर्मसंघ को हम केवल सुरक्षित ही नहीं रखेंगे, बढ़ाते रहेंगे, बढ़ाते रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ ओम-अर्हम्।'

परिषद के बीच में गुरुदेव का यह अन्तिम प्रवचन था। प्रवचन और संगान दोनों ही इतने ओजपूर्ण थे कि उन्हें सुनकर कोई कल्पना ही नहीं कर सकता था कि यह ओजस्वी वाणी और यह मधुर संगान अब इस रूप में सुनने को नहीं मिलेगा।

परम पूज्य गुरुदेव स्वास्थ्य-लाभ के उद्देश्य से एकान्तवास कर रहे थे, किन्तु दिनभर विश्राम करना उन्हें अभीष्ट नहीं था। प्राकृतिक चिकित्सा के दौरान एनिमा, मिट्टी की पट्टी आदि में जितना समय लगाना आवश्यक होता, उसके अतिरिक्त समय में नियमित रूप से दैनिक चर्या चलती थी। दर्शन करने के लिए आनेवाले नए तथा विशिष्ट व्यक्तियों को बातचीत के लिए भी यथेष्ट समय मिल जाता था। गुरुदेव का व्यक्तिगत ध्यान-स्वाध्याय आदि व्यवस्थित रूप में चल रहा था, उसके साथ अध्यापन का क्रम भी चलता था। मुनि श्रेयांसकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि हिमांशुकुमारजी और मुनि योगेशकुमारजी को प्रायः सह-स्वाध्यायी होने का सौभाग्य प्राप्त था। बालमुनि जम्बूकुमारजी के लिए तो कोई समय निर्धारित था ही नहीं। वे जब चाहते, बेरोकटोक गुरुदेव की सन्निधि में पहुंच जाते और उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित होते रहते।

उन दिनों गुरुदेव सन्तों को 'सिन्दूरप्रकर' का अर्थ कराते थे। एक दिन अध्यापन के समय उन्होंने कहा 'आचार्य सोमदेव ने सिन्दूरप्रकर की रचना क्यों की? निश्चित रूप से कौन बता सकता है। पर मैं समझता हूं कि यह रचना मेरे लिए ही हुई है। मैं पूज्य कालूगणी का अत्यन्त आभारी हूं कि उन्होंने मुझे बचपन में ही सिन्दूरप्रकर याद करवा दिया। मैं तो उस समय कुछ समझता ही नहीं था। पर उस समय के संस्कार मेरे बहुत काम आ रहे हैं। हर साधु-साध्वी को सिन्दूरप्रकर सीखना चाहिए। जो उसे याद नहीं करता है, अवसर चूक जाता है।'

२२ जून को रात्रि के समय गुरुदेव साधुओं को सिन्दूरप्रकर की वाचना दे रहे थे। ७१वें श्लोक का पाठ चल रहा था। उसी समय भारतीय संसद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ आदि दर्शनार्थ आ गए। पाठ बीच में ही छूट गया। कुछ और भी व्यवधान आते रहे। साधुओं ने सोचा कि अब वाचन नहीं हो पाएगा। किन्तु आगन्तुक व्यक्तियों के लौटते ही गुरुदेव ने साधुओं को पुनः याद किया। उन्होंने निवेदन किया कि आज श्रम अधिक हो गया। चालू श्लोक कल पूरा हो जाएगा। गुरुदेव ने कहा 'इस श्लोक को तो आज ही पूरा करना है। कल का क्या भरोसा? इसे कल के लिए नहीं छोड़ना है। उस समय किसी का ध्यान इस बात की ओर नहीं गया कि गुरुदेव ऐसा क्यों फरमा रहे हैं। क्योंकि महापुरुषों की कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो तत्काल समझ में नहीं आतीं। समय पर ही उनके रहस्य से पर्दा उठता है। गुरुदेव का निश्चय दृढ़ था। अतः अनेक व्यवधानों के बावजूद तीन चरणों में उस श्लोक का पूरा पाठ करके ही गुरुदेव ने रात्रि-विश्राम किया।

२२ जून को रात्रि में जिन महानुभावों ने गुरुदेव की उपासना का लाभ उठाया, उनमें डॉ. बलराम जाखड़, श्री लाल बाबा और विधायक भीमसेन चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं। गुरुदेव ने उनके साथ मुक्त वार्तालाप किया। वह अविकल रूप में यहां प्रस्तुत है

जाखड़ आज आपके दर्शन कर बहुत प्रसन्नता हुई।

गुरुदेव आपसे बहुत पुराना परिचय है।

जाखड़ आपका आशीर्वाद और स्नेह सदा मिलता रहा है।

कार्यकर्ता आप लोकसभा के अध्यक्ष थे, तब भी गुरुदेव के दर्शन के लिए आए थे। अभी आपको अनेक जटिल स्थितियों का सामना करना पड़ा, फिर भी आप विचलित नहीं हुए।

गुरुदेव कठिनाई की स्थिति में मनोबल का मजबूत होना जरूरी है।

जाखड़ सबसे बड़ा सम्बल है आपका आशीर्वाद।

गुरुदेव प्रामाणिकता का जीवन जीना सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस सन्दर्भ में मैं एक व्यक्ति का उदाहरण देना चाहता हूं। उन्होंने अपने जीवन में कभी चोरी नहीं की। हमने उन्हें 'प्रामाणिक प्रवर' के सम्बोधन से सम्बोधित किया। उनके जीवन पर कभी कोई अंगुली नहीं उठी। कोई नहीं कह सकता कि वे अप्रामाणिक हैं। उनका नाम

था सेठ सुमेरमलजी दूगड़। वे सरदारशहर के निवासी थे। उनके मकान में सोना निकला। किसी को पता नहीं था। सेठ सुमेरमलजी को पता चला। उन्होंने कहा 'जमीन का धन सरकारी होता है। वह हमारा कैसे हो सकता है।' उन्होंने सरकार को उसकी सूचना दे दी। आज कोई सूचना दे सकता है?

जाखड़ नहीं दे सकता।

गुरुदेव मैंने ऐसा कोई व्यक्ति देखा नहीं। मैं उनके बारे में दूसरी घटना बताऊं उनका एक पुत्र था भंवरलाल दूगड़। वह सरदारशहर की नाक था। हर गरीब की व्यथा को दूर करता। समाजोपयोगी कार्यों में वह सदा जागरूक रहता। एक बार वह दर्शन करने के लिए आया। उस समय मैं मेवाड़ के राजसमंद ग्राम में था। एक दिन मैंने कहा 'तुमने समाज के लिए बहुत किया है। गरीबों के लिए बहुत किया है। किन्तु धर्म के लिए क्या किया? जिस जैनधर्म से तुम्हें संस्कार मिले, उसके लिए तुमने क्या किया?' उसने कहा 'गुरुदेव! जैनधर्म के संस्कार आएं, जैनधर्म के संस्कार प्रबल बनें, इस दिशा में आज से ही कार्य शुरू करूंगा। जैनविश्वभारती बनाऊंगा।' उसका चिन्तन था जैनदर्शन, बौद्धदर्शन और वैदिकदर्शन इन सबका तुलनात्मक अध्ययन हो। इसके लिए वह मकान किराए पर लेकर काम शुरू कर देगा। उस समय मोहनलालजी सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री थे। वह जैनविश्वभारती का चिन्तन लेकर जयपुर जा रहा था। अचानक एक्सीडेंट हुआ। भंवरलाल का देहावसान हो गया। अब आप सेठ सुमेरमलजी का मनोबल देखिए। उन्होंने कहा यदि वह मेरी सम्पत्ति होता तो नहीं जाता। वह मेरी सम्पत्ति नहीं था, इसलिए चला गया। इतना धैर्य और इतना मनोबल! उस प्रसंग में मैंने एक श्लोक कहा था

विरम विरमामुष्मान् नूनं दूरध्यवसायतो,
विपदि महतां धैर्यध्वंसं यदीक्षितुमीहसे।
अयि जड़विधे! कल्पापाये व्यपेत निजक्रमाः,
कुलशिखरिणः क्षुद्रा नैते न वा जलराशयः॥

हे जड़विधि! तुम विपत्तिकाल में महापुरुषों के धैर्य के ध्वंस को देखने के इस दुष्ट अध्यवसाय से विराम लो, विराम लो। अपने क्रम से विमुख होकर न ये कुलशिखरी रहेंगे और न जलराशिसमुद्र।

कितना मार्मिक श्लोक है। काल अच्छे-अच्छे आदमियों को ले जाता है। व्यक्ति चला जाता है, किन्तु उसकी प्रामाणिकता और नैतिकता की छाप अमिट रहती है। अणुव्रत नैतिक और प्रामाणिक जीवन जीने का सन्देश देता है। यदि सब अणुव्रती बन जाएं तो देश का कायाकल्प हो सकता है।

जाखड़ अणुव्रत ने लोकजीवन को बहुत प्रभावित किया है।

गुरुदेव हमारे निकट के लोग अणुव्रती और नैतिक होते हैं तो हमें प्रसन्नता होती है। इसलिए सब नैतिक बनें, दुर्वृत्तियों को छोड़ें, यह सद्प्रयत्न सदा करते रहते हैं।

जाखड़ आपके ये प्रयत्न ही उज्ज्वल भविष्य के संकेत हैं।

गुरुदेव हम कहते हैं कि आदमी जैन बने या न बने, अच्छा मैन अवश्य बने। आदमी सही रूप में अच्छा आदमी बनना सीखे। मनुष्य को मनुष्य बनाने से बड़ा कोई कार्य नहीं है।

जाखड़ यह मानवता ही सबके हृदय को छूती है।

गुरुदेव मानव को मानव बनाने का और कोई कारखाना नहीं है, फैक्ट्री नहीं है। केवल एक ही कारखाना है, वह है चरित्र, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान। अणुव्रत मानवीय आचार-संहिता है। मनुष्य कैसा होना चाहिए, इसका एक प्रारूप है। प्रेक्षाध्यान इस प्रारूप के अनुसार जीवन को ढालने के लिए है। इसके लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। प्रेक्षाध्यान के एक शिविर में जाओ, ध्यान का प्रयोग करो, परिवर्तन आ जाएगा। तीसरा उपक्रम है जीवनविज्ञान। केवल बड़ों और बूढ़ों को ही नहीं, बच्चों को भी सुधारें। जीवनविज्ञान अगली पीढ़ी को सुधारने के लिए है। जैनविश्वभारती में प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान के प्रयोग चल रहे हैं। जब हम जैनविश्वभारती, लाडनूं जाएंगे, वहां आपको याद करेंगे।

जाखड़ मैं अवश्य आऊंगा।

गुरुदेव क्या आप महाप्रज्ञजी के पास जा आए? क्या वहां (तेरापंथ भवन) नहीं जाएंगे?

जाखड़ हम वहां जाकर आए हैं।

गुरुदेव अच्छा! वहां रोजाना पंडाल खचाखच भरा रहता है। लोग समाते ही नहीं हैं। एक दिन नहीं, प्रतिदिन। एक समय नहीं तीनों समय। केवल तेरापंथी ही नहीं; स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, दिगम्बर, जैन-अजैन सब लोग आते

हैं। हमको इतनी प्रसन्नता होती है कि मानव एकता का कितना बड़ा काम हो रहा है।

जाखड़ बहुत अच्छा काम हो रहा है।

गुरुदेव आपका आना इसलिए हो कि आप इस कार्य से जुड़ें।

जाखड़ अवश्य।

गुरुदेव मनुष्य केवल जन्म से नहीं, कर्म से जैन बने।

जाखड़ अच्छा।

गुरुदेव जैन दो प्रकार के होते हैं जन्मना जैन और कर्मणा जैन। जैन परिवार में कोई पैदा हो गया, वह जैन हो गया। वस्तुतः वह जैन नहीं होता है। जो कर्म से जैन होता है, वही सही रूप में जैन होता है।

जाखड़ कर्मणा जैन कैसे बनते हैं?

गुरुदेव व्यसन को त्याग कर और प्रामाणिक जीवन स्वीकार कर। व्यक्ति व्यसनों को त्यागे और अप्रामाणिकता को छोड़े, यही हमारा टैक्स है।

जाखड़ ओ टैक्स तो म्हांनै चोखो लागै। (यह टैक्स तो हमें अच्छा लगता है।)

गुरुदेव लोग कहते हैं कि सन्तों के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। हम कहते हैं कि सन्तों के पास से खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए। हमें नोट नहीं चाहिए, वोट नहीं चाहिए, प्लॉट नहीं चाहिए और रात्रि में रोट (रोटी) भी नहीं चाहिए। हमें केवल खोट (बुराई) चाहिए। जीवन में कोई भी खोट हो, उसे छोड़ें। कोई पानपराग या जर्दा खाता है, ड्रिंक करता है, सिगरेट पीता है, वह इन बुरी आदतों को छोड़े, यही हमारा टैक्स है।

गुरुदेव (लाल बाबा की ओर इंगित करते हुए) आपको यह काम करना चाहिए। जो भी व्यक्ति आए, उसे व्यसनमुक्त बनने की प्रेरणा दें।

लाल बाबा मेरा यही काम है। चौधरीजी से पूछ लीजिए।

जाखड़ लाल बाबा यही काम करते हैं।

गुरुदेव ने प्रसन्न वातावरण में खुलकर बातचीत की। आगन्तुक लोग भी बहुत खुश थे। उनका कार्यक्रम बहुत पहले से निर्धारित नहीं था, फिर भी उन्हें इतना समय मिल गया। उन दिनों गुरुदेव के पास जो भी आते थे, उनको विशेष अनुग्रह प्राप्त होता था। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता कि उनके अन्तःकरण में करुणा, वात्सल्य और अनुग्रह का जो दरिया लहराता था, वह ज्वार के बहाने उछल-उछलकर तट पर खड़े लोगों को अभिस्नात कर रहा है। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में एक बार भी उस वात्सल्य रस का पान कर लिया, वह उसे कभी भूल नहीं पाएगा।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

बोरियापुरा में द्विदिवसीय प्रवास

१२ दिसम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रातः बागोर से ७.०७ किमी. का विहार कर बोरियापुरा पधारे। महातपस्वी शांतिदूत आचार्यवर के स्वागत में गांववासियों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। तेरापंथ समाज तो उत्साह और उल्लास से सराबोर था ही, गांव के अन्य लोगों में भी प्रसन्नता का वातावरण था। कृषक विभिन्न टोलियों में आचार्यवर की अगवानी कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। भव्य स्वागत जुलूस के साथ आचार्यवर श्री मीठालाल अनिलकुमार बाफना के आवास पर पधारे। पूज्यवर का द्विदिवसीय प्रवास पाकर बाफना परिवार अत्यन्त आह्लादित और प्रफुल्लित था। प्रवास स्थल में प्रवेश करने से पूर्व आचार्यवर निकटस्थ राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहां आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर श्री डालचन्द लक्ष्मीलाल मोहनलाल दिनेशचन्द बाफणा परिवार द्वारा निर्मित 'श्री महाश्रमण नैतिक शिक्षा प्रवेश द्वार' का लोकार्पण किया गया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम किसान सम्मेलन के रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। सहाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। बोरियापुरा की सरपंच श्रीमती राजमणि व्यास ने आचार्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति देते हुए गांव के गणमान्य व्यक्तियों के साथ पूज्यवर को अभिनंदनपत्र समर्पित किया। श्री लक्ष्मीलाल बाफणा ने अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। श्री लक्ष्मीलाल बाफणा एवं श्री रूपचन्द बाफणा ने पूज्यवर से सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज बोरियापुरा गांव में पवित्र आभामंडल

वाले महापुरुष के पदार्पण से लोगों का दिल खिल उठा है। मोहनिद्रा में सोए लोगों को जगाने के लिए आचार्यवर यहां पधारे हैं। यहां किसान सम्मेलन की आयोजना की गई है। किसान बन्धु आज आचार्यवर के चरणों में अपनी-अपनी खोट चढ़ाएं। यह आचार्यवर के लिए सबसे बड़ी भेंट होगी। इससे किसानों का जीवन पवित्र बन जाएगा और वे पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बन सकेंगे।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में संबोधि के नवें अध्याय में वर्णित श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा--'भारतीय संस्कृति में चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है--गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास। एक अवस्था के पश्चात व्यक्ति को संन्यास आश्रम की ओर प्रस्थान कर देना चाहिए। साधु तो भोगों का पूर्णरूपेण परित्यागी होता है, किन्तु गृहस्थ वैसा करने में असमर्थ होता है। फिर भी सद्गृहस्थ को भोगों का सीमाकरण अवश्य करना चाहिए। असीमित भोग व्यक्ति को भटकाने वाले होते हैं। व्यक्ति संसार की अनित्यता का चिंतन करता हुआ भोग से योग की ओर प्रस्थान करने का प्रयास करे।'

किसान सम्मेलन में समुपस्थित सैकड़ों किसानों को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्यवर ने कहा--'भारत ऋषि और कृषिप्रधान देश है। किसान अन्न पैदा कर जनता की लौकिक सेवा करता हैं। इस दृष्टि से किसान वास्तविक अन्नदाता होता है। वह यथासंभव ईमानदारी रखे। जहां नैतिकता होती है, वहां शुद्धता रहती है। कृषि कर्म में होने वाली हिंसा से भी जहां तक हो सके, बचने का प्रयास करें। किसान श्रम के द्वारा उपार्जन करते हैं। जो लोग नशा करते हैं, वे अपने श्रम को व्यर्थ गवां देते हैं। मानों उनके श्रम के लाभ का कुछ अंश तो नशारूपी कीड़ा खा जाता है। नशे के दुष्परिणामों को जानकर किसान नशामुक्त बनने का प्रयास करे। इससे उनकी आत्मा उत्थान को प्राप्त हो सकेगी।'

पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, तम्बाकू आदि के सेवन का परित्याग किया। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने भी आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के मध्य प्रसंगवश बोरियापुरा में दिवंगत मुनि खूबचन्दजी (लुहारी-हरियाणा) का भी स्मरण किया।

आज सायंकाल भीलवाड़ा के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री नरसिंहदास व्यास ने पूज्यवर के दर्शन कर पथदर्शन प्राप्त किया। बोरियापुरा के ७७ चौकों में विभक्त २२ परिवार हैं। पूज्यवर के पदार्पण के अवसर पर सूरत, उधना, अहमदाबाद, बेंगलुरु, मुम्बई आदि क्षेत्रों में प्रवासित इन परिवारों के सदस्य और संबंधीजन बड़ी संख्या में बोरियापुरा पहुंचे। रात्रि में सभी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने आचार्यवर से विविध संकल्प स्वीकार किए।

संयम झलके हर प्रवृत्ति में

१३ दिसम्बर। बोरियापुरा प्रवास के दूसरे दिन प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यवर सभी श्रद्धालुओं के घरों में पधारे। प्रायः सुनसान रहने वाली गलियां और घर आज जनाकीर्ण बने हुए थे। आचार्यवर को अपने आंगन में पाकर भक्तजन पुलकित और प्रफुल्लित थे। आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर 'प्रभो ! यह तेरापंथ महान' गीत का संगान किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विकासकुमारजी ने गीत प्रस्तुत किया। श्री पुखराज राहुल बाफणा, श्रीमती हेमलता परमार, श्री रतनलाल बाफणा, सुशील बाफणा, वंदना गीता बाफणा, श्री ओमप्रका ा गादिया, तेरापंथ महिला मंडल, कन्यामंडल तथा उधना, अहमदाबाद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत व वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। दर्शन, दृष्टि बाफणा एवं अक्षत बोहरा ने अपने बालसुलभ भावों को प्रस्तुत किया। डा. महेन्द्र कर्णावट एवं श्री बालूभाई पटेल (सूरत) ने अपने विचारों को प्रस्तुति दी। समणी विपुलप्रज्ञाजी ने गीत के द्वारा पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधक की प्रत्येक प्रवृत्ति में संयम झलकना चाहिए। वह ऐन्दियिक विषयों का वर्जन कर ईर्या समितिपूर्वक चले, भोजन का विवेक रखे। जो भोजन साधना में बाधक बनता है, उसका परिहार करे। उसका आहार स्वाद के लिए नहीं, साधना के लिए हो। वह मित, सत्य, मधुर और विचारित भाषा का प्रयोग करे। इस प्रकार उसका हर कार्य संयम और विवेकपूर्वक हो।'

मध्याह्न में आचार्यवर की सन्निधि में 'बहन, बेटी-जमाई सम्मेलन' का आयोजन हुआ। संभागियों को पूज्यप्रवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ।

अड़सीपुरा में जनप्रतिनिधि सम्मेलन

१४ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः ५.०४ किमी. का विहार कर अड़सीपुरा पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से गांव का आबालवृद्ध उल्लसित था। सर्वत्र श्रद्धा का ज्वार हिलोरें ले रहा था। विशाल स्वागत जुलूस में जैनेतर लोग भी बड़ी संख्या में सोत्साह सहभागी बने। आचार्यवर का प्रवास स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ।

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम जनप्रतिनिधि सम्मेलन के रूप में समायोजित था। सम्मेलन का विषय था 'चुनाव प्रक्रिया के संदर्भ में अणुव्रत की प्रासंगिकता।' कार्यक्रम के प्रारंभ में स्थानीय तेरापंथ कन्यामंडल एवं महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री मदनलाल धूपिया, श्री संपतलाल आंचलिया एवं श्री प्रकाश सुतरिया ने अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री बाबूलाल गोलछा और डा. महेन्द्र कर्णावट ने विषय के संदर्भ में अपने विचारों को प्रस्तुति दी।

सहाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी ने कहा--'व्यक्ति-व्यक्ति की चेतना को जागृत करने का बीड़ा उठाकर आचार्यश्री जो महान कार्य कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। आप जैसे त्यागी गुरुजनों के प्रयास से ही देश का चारित्रिक उत्थान होगा। राष्ट्र के नवनिर्माण में आपकी भूमिका चिरस्मरणीय रहेगी।'

मांडलगढ़ के विधायक श्री प्रदीपकुमारसिंह ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण के चरणों में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ, यह मेरा परम सौभाग्य है। भ्रष्टाचार आज की मुख्य समस्या बन रहा है। इसका निवारण सब चाहते हैं, किन्तु उसका समाधान आचार्यश्री के पथदर्शन से ही निकलेगा। आम आदमी के कल्याण के लिए आचार्यश्री भगीरथ प्रयास कर रहे हैं।'

भीलवाड़ा जिलाप्रमुख श्रीमती सुशीला साल्वी ने कहा--'भारतीय संस्कृति ऋषि और कृषिप्रधान रही है। आचार्यश्री से मार्गदर्शन प्राप्त करने का जो सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, वह हमारे जीवन का अमूल्य क्षण है। यदि जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार और स्वार्थ से मुक्त होकर कार्य करें तो देश का नैतिक उत्थान निश्चित है। आचार्यश्री के उपदेश से जनता और जनप्रतिनिधियों में नई जागृति आएगी।'

राजस्थान की शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ ने अपने वक्तव्य में कहा--'मैं तो अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली मानती हूं कि मुझे आचार्यश्री का सान्निध्य प्राप्त हुआ। अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यश्री अहिंसा और ईमानदारी का जो पथ दिखा रहे हैं, उस पर चलकर ही हम राजनीति में मूल्यों के ह्रास को रोक पाएंगे। हर व्यक्ति अगर ठान ले तो भ्रष्टाचार को रोकना कोई मुश्किल कार्य नहीं है। मैं आचार्यश्री से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरा दामन हमेशा पाक रहे।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'मेवाड़ में आचार्यश्री की इस यात्रा में जनता को मानों संजीवनी बूटी मिल रही है। लोगों में अतिशय उत्साह है। गांव के लोग कहते हैं कि पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अड़सीपुरा को 'आदर्शपुरम' नाम दिया था। यहां के लोग पूज्य आचार्यश्री के प्रवास का पूरा लाभ उठाते हुए अपने जीवन को पवित्र बनाएं तो अड़सीपुरा यथार्थ में आदर्शपुरम बन सकेगा।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज हम अड़सीपुरा आए हैं और यहां चुनाव प्रक्रिया के संदर्भ में अणुव्रत की भूमिका विषय पर जनप्रतिनिधि सम्मेलन की आयोजना की गई है। मेरा मानना है कि राजनीति कोई अस्पृश्य चीज नहीं है। वह सेवा का माध्यम है। राजनीति के लोग जनता की सेवा भी करते हैं। अपेक्षा इस बात की है कि राजनीति में आने वाला व्यक्ति नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठावान रहे। लोकतंत्र शासन की सुन्दर प्रणाली है। राजतंत्र की अपेक्षा मैं लोकतंत्र को महत्त्व देता हूं। किन्तु लोकतंत्र में प्रशिक्षण की अपेक्षा रहती है। जनप्रतिनिधियों में कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन की भावना जागृत होना आवश्यक है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत लोकतंत्र की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि चुनाव के नियमों को उम्मीदवार और मतदाता दोंनों स्वीकार कर लें तो काफी स्वस्थता आ सकती है। वोट के लिए शराब और पैसे का प्रयोग न हो। शराब और पैसे के बल पर चुनाव जीतना खास बात नहीं है। अपने कर्तृत्व के बल पर चुनाव जीतना विशेष बात होती है।

जनप्रतिनिधि जनता के ही अंग हैं। यदि जनता में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा जाग जाए तो जन प्रतिनिधि स्वतः नैतिक बन जाएंगे। जनता विश्वास के साथ किसी को चुनती है। उस विश्वास को कायम रखना जनप्रतिनिधि का दायित्व होता है। यदि वह ईमानदार और सेवानिष्ठ बना रहे तो जनता में लोकप्रिय बन सकता है। सभी जनप्रतिनिधि नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठाशील और नशामुक्त रहकर पवित्र कार्य करते रहें।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात श्री विनोद सुतरिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। आज के कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों के विधायक, नगरपालिकाध्यक्ष, सरपंच आदि अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त शिक्षा राज्यमंत्री और विधायकों ने आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित होकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अड़सीपुरा में तेरापंथ समाज के बाईस घर हैं। आचार्यवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात सभी घरों में पधारे। रात्रि में सभी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

चान्दरास में छाया उल्लास

१५ दिसम्बर। पूज्य आचार्यवर आज ६.०८ किमी. का विहार कर चान्दरास पधारे। गांववासियों का उल्लास और उत्साह दर्शनीय था। यहां पूज्यवर का प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के प्रारंभ में गांव की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। पूर्व सरपंच श्री चांदमल भलावत ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। बालिका खुशी कोठारी और ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने बालस्वरों में अपनी प्रस्तुतियां दीं। श्री रोशनलाल बूलिया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शरीर अनित्य होता है। वह उसका स्वभाव है। किन्तु उसके द्वारा अमर आत्मा का कल्याण किया जा सकता है। साधक शरीर को पोषण इसलिए देता है, क्योंकि वह धर्म की साधना में सहायक बनता है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है तो स्वाध्याय, ध्यान, सेवा आदि में कठिनाई हो सकती है। साधक के भोजन का एकमात्र लक्ष्य साधना होना चाहिए।' आचार्यवर ने आगे कहा--'मौत से किसी भी प्रकार का डर और जीने की भी कोई आकांक्षा नहीं रहनी चाहिए। जब तक जीएं, इस शरीर के द्वारा धर्म की साधना करनी चाहिए। जीवन को ऐसा जीएं कि अगली गति भी अच्छी हो सके। केवल यह जन्म ही नहीं, अगले जन्म पर भी ध्यान दें और उस पर ही क्या, परम मोक्ष की ओर भी ध्यान दें और उसकी साधना का अभ्यास करें।'

चान्दरास में सात तेरापंथी परिवारों सहित उन्नीस जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रि में उन्हें उपासना का अवसर प्रदान किया। अनेक लोगों ने विविध संकल्प स्वीकार किए। आज सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात पूज्य आचार्यवर की सन्निधि में अनायास ही प्रसंगों का दौर चल पड़ा। संतों ने आचार्य महाप्रज्ञ और युवाचार्य महाश्रमण की महान युगलजोड़ी से संबद्ध विविध घटना-प्रसंग सुनाए। आचार्यवर ने भी अपने गुरु की अत्यन्त कृपापूर्ण वत्सलता के प्रति विनयभाव से सादर कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हुए अनेक संस्मरण सुनाए।

नाथ आए नाथड़ियास

१६ दिसम्बर। आज गणनाथ परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः चान्दरास से चावंडिया की ओर विहार करते हुए नाथड़ियास पधारे। यहां पधारने से पूर्व मार्गवर्ती पनोतिया गांव के लोगों ने भी आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। नाथड़ियास गांव के सैकड़ों लोग आचार्यवर की अगवानी कर हर्षविभोर थे। यहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री विमल पीतलिया एवं स्थानीय कन्याओं के द्वारा गीत प्रस्तुति के बाद राजस्थान के पूर्व उच्च शिक्षामंत्री श्री रतनलाल जाट, श्री अशोक चंडालिया, जिला भाजपाध्यक्ष श्री सुभाष बहेड़िया, पूर्व पंचायत राज्यमंत्री श्री कालूलाल गुर्जर और श्री मांगीलाल कोठारी ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में दसवेआलियं के प्रथम श्लोक की व्याख्या करते हुए विशाल जनमेदिनी को अहिंसा, संयम और तपस्या के द्वारा अपनी जीवनशैली को धर्म से अनुप्राणित बनाने हेतु प्रेरित किया। नाथड़ियास में चार तेरापंथी परिवार हैं। कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यवर ने उनके तथा अन्य जैन घरों को अपनी चरणरज से पावन किया।

दो प्रवचन सुन तृप्त बना जन-जन

परम श्रद्धेय आचार्यवर नाथड़ियास में प्रवचन और घरों का स्पर्श कर ११.०२ किमी. का विहार कर लगभग साढ़े ग्यारह बजे चावण्डिया पधारे। अब तक आचार्यवर निर्जल, निराहार तप धारण किए हुए थे। पूज्यवर यहां के

प्रवास स्थल श्री शोभाचन्द कुमावत के निवास पर पधारे और कुछ ही क्षणों में अत्यल्प पेय ग्रहण कर लगभग पौन किमी. दूर स्थित कार्यक्रम स्थल पर पधार गए। यद्यपि आचार्यवर प्रायः प्रतिदिन प्रातःकाल लगभग आधा घंटा तक एक बार ही प्रवचन फरमाते हैं। किन्तु आज आचार्यवर ने मार्गवर्ती नाथड़ियास के श्रद्धालुओं की भावना को तृप्त करने हेतु वहां भी प्रवचन किया और चावण्डिया के लोगों को भी अपने पावन प्रवचन से परितृप्त किया।

चावण्डिया में आयोजित कार्यक्रम में पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में साधना और स्वास्थ्य के लिए मिताहार और खाद्य विवेक को आवश्यक बताते हुए उपस्थित जनता को भोजन के प्रति अनासक्त रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का प्रेरणादायी उद्‌बोधन हुआ। श्री नरपत गांधी ने चावण्डिया पधारने और अपने आवास पर प्रवचन करने के लिए पूज्य आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। चावण्डिया में एक तेरापंथी परिवार है। पांच भाइयों का गांधी परिवार अपने आराध्य को अपने गांव में पाकर पुलकित था। सायंकालीन आहार के पश्चात् आचार्यवर ने श्रद्धालुओं के घरों को भी पावन किया। रात्रि में गांधी परिवार को उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

पगडंडियों पर चलकर आए भगवान

परम पावन आचार्यवर ने आज प्रातः चावण्डिया से निम्बाहेड़ा (जाटान) के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती सबलपुरा के चौराहे पर स्थित पंचमुखी हनुमान मन्दिर के बाबा कल्याणदासजी ने पूज्यवर का अभिवादन कर अपने आश्रम में पधारने का अनुरोध किया। हरियाली के कारण आचार्यवर आश्रम के भीतर तो नहीं पधार सके, किन्तु आश्रम के द्वार तक पधारकर बाबाजी की भावना को पूरा किया। आज का मार्ग मानों जंगलमय था। दूर-दूर तक कोई बस्ती अथवा मकान दिखाई नहीं पड़ रहा था। यत्र-तत्र पसरी हुई कंटीली झाड़ियों और विभिन्न वृक्षों से घिरी हुई घुमावदार और पथरीली पगडंडियां भी भक्तों के तारणहार पूज्य चरणों को रोकने में असमर्थ थीं।

श्रद्धालुओं की भावना को स्वीकार करते हुए पूज्यप्रवर विहार के मध्य बागोलिया गांव में भी पधारे। यहां आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने उपस्थित जनता को पावन संबोध प्रदान किया। पूज्यवर की पावन देशना से प्रभावित अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। बागोलिया के गांधी परिवार की पांच शाखाएं आचार्यवर को अपने गांव में पाकर प्रफुल्लित थीं। आचार्यवर ने श्रद्धालुओं को निकट उपासना का अवसर प्रदान किया और उनके घरों का स्पर्श किया। श्री शिवलाल सुथार ने पूज्यवर से गुरुधारणा स्वीकार की।

बागोलिया से प्रस्थान कर आचार्यवर कच्चे मार्ग से होते हुए कुल लगभग १५ किमी. का विहार कर निम्बाहेड़ा पधारे। पूज्यवर के पदार्पण से पूरे गांव में उत्सव का-सा वातावरण रहा। परमपूज्य आचार्यवर का प्रवास अपने निवास पर प्राप्त कर श्री शांतिलाल धर्मचन्द दक परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

स्थानीय रावले में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में मृत्यु को दुनिया का अनिवार्य नियम बताते हुए लोगों को संयममय जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का भी प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। रावले के ठाकुर हरिसिंहजी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। भटेवरा परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डा. बसंतीलाल बाबेल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

निम्बाहेड़ा में दस तेरापंथी परिवार सहित कुल तेईस जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात उनके घर पूज्यवर की पदरज से पावन बने। रात्रि में उन्हें आचार्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

अनुकंपा, अनुशासन और अनुग्रह

१८ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः निम्बाहेड़ा से चिताम्बा के लिए प्रस्थान किया। कुछ दूर चलने के बाद कच्चा पथ प्रारंभ हो गया। इस ऊबड़-खाबड़ मार्ग में गड्ढों को भरने के लिए यत्र-तत्र सचित्त मिट्‌टी डाली हुई थी। अनुकंपा के मूर्तिमान आदर्श आचार्यवर उस मिट्‌टी के स्पर्श से बचने के लिए कभी मार्ग के इस छोर पर तो कभी उस छोर पर पधार रहे थे। कुछ दूर चलने पर जब मिट्‌टी की बहुलता दिखने लगी तो आचार्यवर उस पथ के परिपार्श्व में स्थित पगडंडी पर पधार गए। किन्तु यहां भी कुछ दूर बाद ही सघन हरियाली आ गई। आचार्यवर पुनः मूल पथ पर पधारे। इस पथ पर कहीं-कहीं तो सचित्त मिट्‌टी के स्पर्श से बचना असंभव-सा हो गया। इस प्रकार आचार्यवर ने जैसे-तैसे लगभग पांच किमी. की दूरी तय कर ली। मिट्‌टी के जीवों की होने वाली हिंसा करुणा के महासागर के लिए असह्य हो गई। पूज्यवर ने सहसा अपने चरण रोक लिए और चिताम्बा के लोगों से पूछा--'यह

मिट्टी किसने डाली है?' किसी जिम्मेदार और मुखिया के अभाव में लोगों ने अनभिज्ञता व्यक्त की। आचार्यवर ने लोगों को उपालंभ देते हुए कहा--'गांव के प्रमुख व्यक्तियों को दर्शन कराओ। जब हमने बार-बार निषेध कर दिया कि हमारे मार्ग में सचित्त मिट्टी मत बिछाओ, फिर भी यहां मिट्टी बिछा दी गई। चिताम्बा वालों ने बड़ी भूल की है। हमारे लिए बड़ी समस्या हो गई। हम कैसे चलें? हमारे पैरों से जीवों की हिंसा होती है तो आत्मा कांपती है। कोई दूसरा गांव आसपास में हो तो हम वहां चले जाएंगे, किन्तु ऐसे पथ से तो चिताम्बा नहीं जा सकते।' इतना कहकर आचार्यवर ने पुनः अपने चरण निम्बाहेड़ा की ओर बढ़ा दिए। यह देखकर सभी सेवार्थी किंकर्तव्यविमूढ़ बन गए। प्रथम बार पूज्यवर को कठोर अनुशास्ता के रूप में देखकर लोग आश्चर्यचकित थे। चिताम्बावासी तो हक्के-बक्के से रह गए। कुछ क्षणों में वे संभले और गुरुचरणों में लुंठित हो गए। अत्यन्त विनम्रता के साथ उन्होंने चिताम्बा पधारने का अनुरोध किया।

आचार्यवर ने कहा--'इस मार्ग से तो हम चिताम्बा नहीं जा सकते। कोई दूसरा रास्ता हो तो बताओ, अन्यथा हम दूसरे गांव में जा सकते हैं।'

एक भाई बोला--'पूज्यवर ! यहां से लगभग पौन किमी. चलने के बाद एक दूसरा मार्ग है। आप कृपा कराएं।' कुछ क्षण चिंतन के पश्चात आचार्यवर पुनः चिताम्बा की दिशा में प्रस्थित हुए। सीधे मार्ग पर सचित्त मिट्टी के स्पर्श से बचने के लिए सर्पाकार चलते हुए सचित्त मिट्टी वाले पथ को छोड़कर आचार्यवर दूसरे मार्ग पर पधारे। यह पथ कच्चा था, किन्तु निर्बाध था।

इस मार्ग में मध्यवर्ती सरेड़ी गांव के ग्रामीणों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। इस प्रकार लगभग ११ किमी. का विहार कर आचार्यवर चिताम्बा पधार गए। पूज्यप्रवर के स्वागत में जन सैलाब उमड़ पड़ा। सर्वत्र उत्साह और उल्लास का पारावार दिखाई दे रहा था, किन्तु आचार्यवर का करुणार्द्र हृदय मूक जीवों की हिंसा से द्रवित बना हुआ था। अन्तरात्मा में अनुकंपा का सागर उमड़ रहा था। स्वागत जुलूस के पथ को छोड़कर आचार्यवर सीधे तेरापंथ भवन में पधारे।

कुछ क्षणों के बाद आचार्यवर प्रातराश किए बिना ही कार्यक्रम स्थल पर पधारे। पूर्व पंचायत राज्यमंत्री श्री कालूलाल गुर्जर ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। तत्पश्चात आचार्यवर ने बिना किसी भूमिका के कहा--'हम चिताम्बा आए हैं, किन्तु आज बोलने की इच्छा नहीं है। इसका कारण है मार्ग में सचित्त मिट्टी बिछाई हुई थी। बार-बार व्याख्यान में कहने और विज्ञप्ति में प्रकाशित होने के बावजूद भी लोगों ने उस पर ध्यान नहीं दिया। यदि आसपास में और कोई गांव होता तो हम वहां चले जाते। अब तो चिताम्बा आ गए हैं, किन्तु आज दिन और रात्रि में हमारा कोई प्रवचन नहीं होगा और सचित्त मिट्टी के स्पर्श से होने वाली हिंसा के प्रायश्चित्तस्वरूप मुझे और साधु-साध्वियों को एक चौविहार पोरसी अथवा एक दिन पांच विगय का वर्जन करना है और यथासंभव यह पोरसी कल ही कर लें। कल चिताम्बा में कोई नाश्ता न करे।' इतना-सा फरमा कर आचार्यवर ने जनता को मंगलपाठ सुना दिया और पुनः प्रवास स्थल पधार गए।

चिताम्बावासियों के साथ आसपास के क्षेत्रों से समागत बड़ी संख्या में लोग आचार्यवर के इस निर्णय को सुनकर स्तब्ध रह गए। खिले हुए चेहरों की प्रसन्नता गायब हो गई, मायूसी और किंकर्तव्यविमूढ़ता मुखस्थ हो गई। अनेक लोगों की आंखों से अश्रुधारा बह चली। सैकड़ों लोग आचार्यवर के प्रवास स्थल पर आए और अनुनय विनयपूर्वक आचार्यवर को रिझाने का प्रयास किया। किन्तु आचार्यवर प्रवचन न करने के अपने निर्णय पर अटल थे। श्रद्धालुओं ने अत्यन्त विनम्रता के साथ पुनः निवेदन किया--'प्रभो! हमसे बहुत बड़ा अपराध हो गया। आप हमारे नाथ हैं, महान हैं, करुणानिधान हैं। हमारी नादानी का और कोई दण्ड फरमा दें। हम उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे। किन्तु गुरुदेव! आप एक बार पण्डाल में पधारने की कृपा कराएं। यदि आप प्रवचन न फरमाएं तो कोई बात नहीं, वहां पधार कर दर्शन ही दे दें।' आचार्यवर ने उनकी भक्तिपूर्ण प्रार्थना को स्वीकार कर पंडाल में पधारे और मंच पर विराजमान हुए। विशाल जनमेदिनी ने पूज्यवर से क्षमायाचना की। आचार्यवर ने अपने पूर्व निर्णयानुसार प्रवचन तो नहीं किया, किन्तु चिताम्बावासियों को नशामुक्त बनने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। तत्पश्चात् आचार्यवर ने तेरापंथ समाज को उपासना का अवसर प्रदान करते हुए विविध संकल्प कराए। इसके बाद आचार्यवर ने चिताम्बावासियों पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए कहा--'मैंने जो प्रायश्चित्तस्वरूप पोरसी की बात कही है, वह हम कल नहीं करेंगे। कल तो जो साधु-साध्वियां प्रातराश नहीं करने वाले हैं, वे भी करें और हेवी ब्रेकफास्ट करें।'

श्रीमुख से यह सुनकर चिताम्बावासियों का मन कुछ आश्वस्त हुआ। रात्रि में आयोजित भजन संन्ध्या में भी

आचार्यवर का कुछ देर के लिए पदार्पण हुआ। श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया ने आचार्यवर द्वारा रचित गीत का संगान किया। चिताम्बावासियों के निवेदन पर पूज्यवर ने भी एक गीत का संगान किया। आचार्यवर की अनुग्रहवृष्टि यहीं नहीं थमी।

प्रवास के दूसरे दिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में अपने मंगल प्रवचन के दौरान आचार्यवर ने कहा--'कल मैनें जो आप लोगों की श्रद्धा-भक्ति देखी तो मैं भी द्रवित हो गया। भक्ति का कोई साकार रूप देखना हो तो कल चिताम्बा में देखा जा सकता था। कल आपके मन में पीड़ा हो गई। वह पीड़ा होनी भी भक्ति की परिचायक है। हालांकि मैं मानता हूं कि मिट्टी भी इसीलिए बिछाई गई थी कि पथरीले और ऊबड़-खाबड़ पथ में हमें कोई तकलीफ न हो जाए। किन्तु हमारे लिए वह समस्या बन गई। मन में ग्लानि का भाव हो गया कि सचित्त मिट्टी का बार-बार स्पर्श हो रहा है। परन्तु आपकी श्रद्धा-भक्ति से मैं प्रभावित हुआ। श्रावकों में ऐसी भक्ति होनी चाहिए कि कड़ाई होने पर भी वे भक्ति, श्रद्धा और विनय को न छोड़ें, अपितु और ज्यादा भक्ति करने का प्रयास करें। मैं चिताम्बा वालों की भक्ति से प्रभावित होकर उन्हें दो बक्सींसें देना चाहता हूं--

१. **भविष्य में जब कभी समाज के मुखिया व्यक्ति मुझसे साधु अथवा साध्वियों का चातुर्मास मांगेंगे, उन्हें बिना ननुनच किए एक बार एक चतुर्मास देने का भाव है।**
२. **भविष्य में यदि मैं कभी मेवाड़ के भीलवाड़ा जिले की यात्रा करूंगा तो चिताम्बा में कम-से-कम चार दिन का प्रवास करने का भाव है।**

आचार्यवर के मुखारविन्द से कृपायुक्त अनुग्रह प्राप्त कर चिताम्बावासियों की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। ऊं अर्हम् और जयनिनाद से पूरा पंडाल गुंजायमान हो उठा। इस प्रकार पूज्यवर द्वारा प्रवाहित अनुकंपा, अनुशासन और अनुग्रह की इस त्रिवेणी में अभिस्नात होकर चिताम्बा का हर व्यक्ति कृतकृत्यता की अनुभूति कर रहा था। यह प्रसंग औरों के लिए भी सावधान रहने का संकेत था।

देखा तुलसी-सा अनुशासन, महाप्रज्ञ-सी करुणा देखी

चिताम्बा प्रवेश के दिन पूज्यवर में गुरुदेव तुलसी के अनुशासन और आचार्य महाप्रज्ञ की करुणा के साक्षात् दर्शन हुए। जहां चिताम्बावासियों पर अनुशासन और अनुग्रह की वृष्टि हुई, वहीं अनेक साध्वियों ने भी आचार्यवर के कठोर अनुशासन और करुणा में अभिस्नात होकर धन्यता की अनुभूति की। चिताम्बा में प्रवेश के दिन पूज्यवर के प्रवास स्थल पर पधारने पर साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां आचार्यवर को वंदना करने आईं। किन्तु पहले से चिताम्बा में प्रवासित साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी और साध्वी विद्यावतीजी (श्रीडूंगरगढ़) आदि साध्वियां दर्शनार्थ नहीं आईं। पूज्यवर ने साध्वीप्रमुखाजी से उपालंभ के स्वर में कहा--'यहां पहले से प्रवासित साध्वियां क्यों नहीं आईं? लगता है वे साध्वियों की भक्ति (आतिथ्य) में लग गई हैं। उनके लिए गुरु गौण और साध्वियां प्रमुख हो गई क्या? होना तो यह चाहिए कि गुरु की अगवानी करें और वे अब तक वंदना करने भी नहीं आई।'

साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर से निवेदन किया--'गुरुदेव! साध्वियों से बड़ी भूल हुई है। मैं अभी जाकर उन्हें दर्शनार्थ भेजती हूं।' जब उन साध्वियों को इस बात की जानकारी हुई तो वे तुरन्त द्रुतगति से चलती हुई पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुईं। किन्तु आचार्यवर की कड़ी दृष्टि की भाजन बनी वे साध्वियां प्रवास कक्ष में प्रवेश नहीं कर पाईं। जब आचार्यवर बाहर पधारे तो साध्वियां वंदना करने लगीं। लेकिन आचार्यवर ने कहा--'कार्यक्रम स्थल पर ही आ जाओ।'

मन में घबराहट लिए वे साध्वियां पूज्यवर के पदचिह्नों का अनुगमन करती हुई पंडाल में पहुंचीं और मंच पर आचार्यवर को वंदना और सुखपृच्छा करते हुए सांवत्सरिक, चातुर्मासिक, पाक्षिक और दैवसिक खमतखामणा किए। पूज्यवर ने भी उनसे खमतखामणा किया। अग्रगण्य साध्वियों ने समर्पण की निर्धारित शब्दावली का उच्चारण किया। अपनी भूल का अहसास साध्वियों के हृदय को निरंतर कचोट रहा था। वत्सलता के सिंचन के अभाव में उनका मन मुरझाने लगा। किन्तु करें भी तो क्या? कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कुछ समय बाद आचार्यवर कार्यक्रम स्थल से पुनः प्रवास स्थल पर पधारे। दोनों सिंघाड़ों ने आचार्यवर से सविनय क्षमायाचना की।

आचार्यवर ने साध्वियों को प्रेरणा देते हुए कहा--'यह हमेशा ध्यान में रखने की बात है कि हमारे संघ में गुरु के सामने सब गौण होते हैं। गुरु को गौण कर कोई कार्य नहीं होना चाहिए। गुरु जब आएं तो साध्वियां पहले से ही प्रवास स्थल पर उपस्थित रहें और मुख्य द्वार पर गुरु की अगवानी करें। यह हमारी स्वस्थ परंपरा है।'

साध्वियों ने आचार्यवर के संबोध को सविनय स्वीकार करते हुए कहा--'तहत् गुरुदेव! हमसे बड़ी भूल हो गई।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आपने हम पर अमृतवृष्टि कराई। हमारे लिए तो आप ही सब कुछ हैं। आप महान हैं, क्षमाशूर हैं। हमें क्षमा कराएं। साध्वियों ने अत्यन्त भक्ति और समर्पण की भाषा में पूज्यवर से क्षमायाचना की। अब तक आचार्यवर के कठोर अनुशासन का पात्र बनी साध्वियां अब कृपावृष्टि में अभिस्नात होने लगीं। आचार्यवर ने नवागंतुक सभी साध्वियों को अपने करकमल से ग्रास बक्साया और उनकी विनय, भक्ति एवं समर्पण की प्रशंसा करते हुए दो सप्ताह तक सभी प्रकार के विगय वर्जन और एक माह तक औषधीय विगय वर्जन की बक्सीस प्रदान की।

इस प्रकार संपूर्ण घटनाप्रसंग न केवल नवागंतुक साध्वियों के लिए अपितु सभी साधु-साध्वियों के लिए एक बोधपाठ बन गया। गुरुदेव तुलसी के अनुशासन और आचार्य महाप्रज्ञ की करुणा को युगपत् रूप में आचार्यवर में देखकर मन में अनायास ही किसी संस्कृत कवि की यह उक्ति गूंजने लगीं--वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि।'

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- चि. मेधांश (प्रपौत्र-श्रीमती मनोहरदेवी धूलचन्दजी डागा, सुपुत्र-श्रीमती स्मिता-नितिन डागा, देवगढ़-मुम्बई) के शुभ जन्म के उपलक्ष्य में डागा परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. राहुल (सुपौत्र-श्रीमती शान्तादेवी मांगीलालजी झाबक, सुपुत्र-श्रीमती जतनदेवी संपतराज झाबक, भीलवाड़ा-सूरत) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में कैलाशचन्द-अंजना, प्रकाशचन्द-स्नेहा, पंकज, चिन्तन, दर्शन, प्रज्ञा, हर्ष झाबक परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के दो दिवसीय बोरियापुरा प्रवास के उपलक्ष्य में नवरतनमल पुखराज, सौरभ, चिराग बाफणा, बोरियापुरा-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री विनोदकुमार-पुष्पा गेलड़ा (बीदासर-फरीदाबाद) के दाम्पत्य जीवन की २५वीं वर्षगांठ (रजतजयंती) के उपलक्ष्य में उनकी माताजी श्रीमती किरणदेवी गेलड़ा (धर्मपत्नी-स्व. रूपचन्दजी गेलड़ा) व मासीजी श्रीमती कंचनदेवी भुतोड़िया (धर्मपत्नी-स्व. रतनलालजी भुतोड़िया, लाडनूं-हैदराबाद) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री अमोलकचन्दजी भंडारी (छोटीखाटू-चेन्नई) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र अबीरचन्द, सुपौत्र पंकज, अभिषेक भंडारी द्वारा प्रदत्त।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर विशेष प्रवचनमाला

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में १७-२५ जनवरी २०१२ के मध्य आमेट में दर्शनाचार पर विशेष प्रवचनमाला समायोजित की जा रही है। इस प्रवचनमाला के अंतर्गत निर्धारित विषयों पर परमाराध्य आचार्यप्रवर के विशेष प्रवचन होंगे। प्रवचनमाला के विषय इस प्रकार हैं--

१७ जनवरी	सम्यक्त्व का दीया कैसे जले?	२१ जनवरी	सम्यक्त्व की पहचान
१८ जनवरी	आदर्श कौन?	२३ जनवरी	सम्यक्त्व के दूषण
१९ जनवरी	मार्गदर्शक कौन?	२४ जनवरी	इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं
२० जनवरी	मंजिल तक पहुंचाने वाला पथ	२५ जनवरी	संघनिष्ठा का विकास

दीक्षा महोत्सव की घोषणा

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आमेट में माघ शुक्ला दशमी तदनुसार २ फरवरी २०१२ को दीक्षा महोत्सव करने और उस समारोह में मुमुक्षु हेमाक्षी (दोलतगढ़) को समण दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की है।

संपर्क के लिए हमारा पता है–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०६६८००५५३८१, ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**